बलशाली थे, वैसे ही मानसिक वीर तथा आत्मा से उच्च सिद्ध हुए। इन सबके परिणामस्वरूप अदालत में तुमको मेरा सहकारी (लेफ्टीनेन्ट) ठहराया गया और जज ने मुकदमे का फैसला लिखते समय तुम्हारे गले में जयमाला (फाँसी की रस्सी) पहना दी। प्यारे भाई, तुम्हें यह समझकर संतोष होगा कि जिसने अपने माता-पिता की धन-संपत्ति को देश-सेवा में अर्पण करके उन्हें भिखारी बना दिया, जिसने अपने सहोदर के भावी भाग्य को भी देश-सेवा की भेंट कर दिया, जिसने अपना तन-मन-धन सर्वस्व मातृ-सेवा में अर्पण करके अपना अंतिम बलिदान भी दे दिया, उसने अपने प्रिय सखा अशफ़ाक को भी उसी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।

'असगर' हराम इश्क में हस्ती ही जुर्म है।
रखना कभी न पाँव यहाँ सर लिये हुए ॥

शब्दार्थ-टिप्पण

बादशाही एलान बादशाह द्वारा जारी की गई घोषणा, राजाज्ञा (यहाँ मैनपुरी षड्यंत्र से संबंधित घोषणा) **हार्दिक** दिली, आंतरिक **षड्यंत्र** साजिश, दुरभिसंधि **उपेक्षा** अवहेलना (अपेक्षा का विलोम) **मुल्क़** देश, वतन, राज्य, प्रदेश **ख़िदमत** सेवा-टहल, चाकरी **काफ़िर** नास्तिक (इस्लाम धर्म को न मानने वाले के संकुचित अर्थ में) **ऐक्य** एकता, एका **अनुरोध** आग्रह, विनती, प्रार्थना **अगाध** अथाह, अपार **हृदयकंप** (Palpitation of heart) हृदय का तेजी से धड़कना, नाड़ी चलना, धुकधुकाना **अवहेलना** अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार **सहकारी** सहकर्मी, सहायक कार्यकर्ता, साथ में काम करने वाला (वर्तमान में इसका Co-operative के अर्थ में भी प्रयोग हो रहा है।) **हराम** दूषित, निषिद्ध, अनुचित **हस्ती** अस्तित्व, जीवन **जुर्म** अपराध, वह काम जिसे कानूनन दंडनीय माना गया हो

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) स्कूल में पहली मुलाकात पर रामप्रसाद ने अशफ़ाक की बातों का उत्तर कैसे दिया ?

(2) अशफ़ाक के किस परिचय को जानकर 'बिस्मिल' को बहुत प्रसन्नता हुई ?

(3) अशफ़ाक तथा बिस्मिल की मैत्री को लोग आश्चर्य क्यों मानते थे ?

(4) अशफ़ाक के हिन्दी सीखने का क्या कारण था ?

(5) अशफ़ाक 'बिस्मिल' को किस नाम से पुकारते थे ?

(6) लोगों को अशफ़ाक की 'शुद्धि' का भय क्यों था ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) अशफ़ाक ने बिस्मिल के दिल में जगह कैसे बनाई ?

(2) बीमारी के दिनों में अशफ़ाक द्वारा राम-राम बोलने का क्या रहस्य था ?

(3) काकोरी कांड में अशफ़ाक को रामप्रसाद बिस्मिल का लेफ्टीनेन्ट क्यों ठहराया गया ?

(4) शहादत के पूर्व रामप्रसाद बिस्मिल को किस बात का संतोष था ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छ वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) अशफ़ाक 'बिस्मिल' के सच्चे मित्र किस प्रकार बन गए ?

(2) क्रांतिकारी जीवन काल में अशफ़ाक किन-किन बातों के लिए प्रयत्नशील रहे ?

(3) पाठ के आधार पर अशफ़ाक की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

(4) 'बिस्मिल' के जीवन से आपको क्या-क्या प्रेरणा मिलती है ? सविस्तार लिखिए।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

मिलन, उपेक्षा, प्रकाश, नाखुशी, प्रतिष्ठित, उच्च, विशाल, अनुरोध

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द बताइए :

अमाघ, अवहेलना, मुल्क, ख्वाहिश, ख़िदमत

6. उदाहरण समझकर प्रत्यय अलग करके लिखिए :

उदाहरण : बादशाही – बादशाह + ई

उल्लेखनीय –

मित्रता –

हिन्दुओं –

पक्षपाती –

समझकर –

7. उदाहरण के अनुसार उपसर्ग अलग कीजिए :

उदाहरण : अप्रसन्न – अ + प्रसन्न

सहकर्मी –

प्रगति –

आगमन –

नाखुश –

8. विग्रह करके समास का नाम बताइए :

इष्ट-मित्र, मातृ-सेवा, स्वदेश-भक्ति, हिन्दू-मुसलमान, प्रतिदिन

9. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(काफ़िर, भक्त, शुद्धि, अवहेलना)

(1) अशफाक ने 'बिस्मिल' की आज्ञा की कभी .... नहीं की।

(2) एक आज्ञाकारी .... की तरह मेरी (बिस्मिल की) आज्ञापालन में तत्पर रहते थे। (अशफ़ाक)

(3) आर्यसमाज द्वारा उन दिनों मुसलमानों की .... की जाती थी।

(4) सांप्रदायिक झगड़ों के दिनों में अशफ़ाक को उसके मुहल्ले के लोग .... कहते थे।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' की 'आत्मकथा' प्राप्त करके पढ़िए।
- 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में गुजरात के क्रांतिकारियों के योगदान के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को भारतीय स्वाधीनता संग्राम के कुछ अन्य क्रांतिकारी वीरों का परिचय दीजिए।
- 'बसंत-रज्जब' (हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए) की शहादत के बारे में जानकारी दीजिए।

●

9 समर शेष है

रामधारी सिंह 'दिनकर'

(जन्म : सन् 1908 ई.; निधन : 1974 ई.)

जन-जागरण की काव्य-धारा को प्रखर बनानेवाले ओजस्वी कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार में मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। कुछ वर्षों तक अध्यापन कार्य किया, हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक रहे, बिहार सरकार के प्रचार-विभाग में उप-निदेशक, मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा भागलपुर विश्वविद्यालय के उप कुलपति के रूप में इन्होंने अपनी सेवाएँ दीं। ये भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार तथा राज्यसभा के सदस्य भी रहे।

ये भारतीय इतिहास के ज्ञाता थे। दिनकरजी का व्यक्तित्व एवं कवित्व राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत रहा। दिनकरजी की सबसे बड़ी विशेषता है - अपने देश और युग के प्रति जागरूकता। कवि ने तत्कालीन घटनाओं, विषमताओं का खुलकर चित्रण किया है। इन्होंने प्राचीन कथाओं को वर्तमान युग की समस्याओं नए जीवनमूल्यों, नए विचारों को उपेक्षित सामान्य मानव की आकांक्षाओं के साथ जोड़ा। इनकी वाणी में शक्ति है, ओज है। इनकी कविता में शोषित और पीड़ित वर्ग की व्यथा और उससे मुक्ति का संघर्ष है। इस राष्ट्रीय प्रतिभा के कवि ने चिंतनात्मक निबंध भी लिखे हैं। 'संस्कृति के चार अध्याय' तो दिनकरजी की राष्ट्रीय एवं चिंतनात्मक प्रतिभा का शीर्षस्थ प्रमाण है, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'उर्वशी' के लिए इन्हें सन् 1972 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। दिनकरजी ने अधिकांश ऐसी कविताओं का सृजन किया है, जो जन-जीवन को शौर्य, पराक्रम एवं ओज से परिपूर्ण करके कर्मण्यता की ओर उन्मुख करनेवाली है।

'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'नई दिल्ली' तथा 'विपथगा' इनके प्रसिद्ध काव्य हैं। 'अर्ध नारीश्वर', 'मिट्टी की ओर' तथा 'रेती के फूल' आदि इनके निबंध संग्रह हैं।

प्रस्तुत कविता में दिनकरजी ने अपनी ओजस्वी वाणी से भ्रष्टाचारी और अन्यायी शासन व्यवस्था को ललकारते हुए सावधान किया है, और साथ ही जन साधारण को जाग्रत करते हुए एकजुट होने का आह्वान किया है। कवि कहता है कि अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ है - 'समर शेष है'।

ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो।
किसने कहा, युद्ध की वेला गई, शान्ति से बोलो।
किसने कहा, और मत बेधो हृदय वह्नि के शर से,
भरो भुवन का अंग कुसुम से, कुंकुम से, केशर से ?

कुंकुम लेपूँ किसे ? सुनाऊँ किसको कोमल गान ?
तड़प रहा आँखों के आगे भूखा हिन्दुस्तान।

फूलों की रंगीन लहर पर ओ उतरानेवाले !
ओ रेशमी नगर के वासी ! ओ छवि के मतवाले !
सकल देश में हालाहल है, दिल्ली में हाला है।
दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में अंधियाला है।

मखमल के परदों के बाहर, फूलों के उस पार,
ज्यों का त्यों है खड़ा आज भी मरघट-सा संसार।

वह संसार जहाँ पर पहुँची अब तक नहीं किरण है,
जहाँ क्षितिज है शून्य अभी तक अंबर तिमिर-वरण है।
देख जहाँ का दृश्य आज भी अंतस्तल हिलता है,
माँ को लज्जावसन और शिशु को न क्षीर मिलता है।

पूछ रहा है जहाँ चकित हो जन-जन देख अकाज
सात वर्ष हो गये, राह में अटका कहाँ स्वराज ?

अटका कहाँ स्वराज ? बोल दिल्ली ! तू क्या कहती है ?
तू रानी बन गयी, वेदना जनता क्यों सहती है ?
सब के भाग दबा रक्खे हैं किसने अपने कर में ?
उतरी थी जो विभा, हुई बन्दिनी, बता, किस घर में ?

समर शेष, है यह प्रकाश बन्दीगृह से छूटेगा।
और नहीं तो तुझ पर पापिनि ! महावज्र टूटेगा।।

समर शेष है, इस स्वराज्य को सत्य बनाना होगा।
जिसका है यह न्यास, उसे सत्वर पहुँचाना होगा।
धारा के मग में अनेक पर्वत जो खड़े हुए हैं।
गंगा का पथ रोक इन्द्र के गज जो अड़े हुए हैं;

कह दो उनसे, झुकें अगर तो जग में यश पायेंगे,
अड़े रहे तो ऐरावत पत्तों-से बह जायेंगे।

समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो,
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो।
पथरीली, ऊँची जमीन है, तो उसको तोड़ेंगे,
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे।

समर शेष है, चलो ज्योतियों के बरसाते तीर,
खंड-खंड हो गिरे विषमता की काली जंजीर।

समर शेष है, अभी मनुज-भक्षी हुंकार रहे हैं।
गांधी का पी लहू जवाहर पर फुफकार रहे हैं।
समर शेष है, अहंकार इनका हरना बाकी है।
वृक को दंतहीन, अहि को निर्विष करना बाकी है।

समर शेष है, शपथ धर्म की, लाना है वह काल,
विचरें अभय देश में गाँधी और जवाहरलाल।

तिमिर-पुत्र ये दस्यु कहीं कोई दुष्काण्ड रचें ना।
सावधान हो खड़ी देश भर में गाँधी की सेना।
बलि देकर भी बली ! स्नेह का यह मृदु व्रत साधो रे !
मन्दिर औ' मस्जिद, दोनों पर एक तार बांधो रे !

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।

शब्दार्थ-टिप्पण

तरकस तीर रखने का चोंगा, तूणीर, निषंग **कस** वह रस्सी जिससे कोई चीज़ बांधी जाय **वेला** समय, अवसर **वह्नि** अग्नि, आग **शर** बाण, तीर **हलाहल** जहर **क्षितिज** जिस स्थान पर जमीन आसमान मिलते हुए दिखाई दें **अंबर** आकाश **क्षीर** दूध **तिमिर** अंधकार **विभा** प्रभा, कांति, किरण, सौंदर्य **महावज्र** इन्द्र का अस्त्र, दधीचि की हड्डी से बना नोकदार अस्त्र **सत्वर** शीघ्र **वृक** भेड़िया **अहि** सर्प **निर्विष** विष रहित **दस्यु** डाकू **व्याध** बहेलिया, शिकारी।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि की दृष्टि से हिन्दुस्तान की दशा कैसी है ?
(2) कवि ने माता और शिशु की दुर्दशा के बारे में क्या कहा है ?
(3) कवि 'दिल्ली' से क्या प्रश्न पूछता है ?
(4) ऐरावत किसके समान बह जायेंगे ?
(5) मंदिर-मस्जिद के बारे में कवि क्या कहते हैं ?
(6) तटस्थ लोगों का अपराध कौन लिखेगा ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने देशवासियों एवं दिल्लीवासियों में क्या अन्तर दर्शाया है ?
(2) स्वराज लाने के लिए कवि बाधक तत्वों को क्या चेतावनी देते हैं ?
(3) विषमता दूर करने के विषय में कवि के क्या विचार हैं ?
(4) मनुजभक्षियों के बारे में कवि ने क्या कहा हैं ?
(5) कवि गांधी की सेना को क्या निर्देश देता है ?

3. प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) 'समर शेष है' काव्य में व्यक्त कवि के आक्रोश को अपने शब्दों में लिखिए।

(2) 'समर शेष है' ऐसा कवि क्यों कहता है ? काव्य के आधार पर समझाइए।

(3) काव्य का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

4. काव्य पंक्तियों का भाव समझाइए :

समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो,
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो।
पथरीली, ऊँची जमीन है, तो उसको तोड़ेंगे,
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे।

समर शेष है, चलो ज्योतियों के बरसाते तीर
खंड-खंड हो गिरे विषमता की काली जंजीर।

5. सही विकल्प चुनकर काव्य-पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(1) तड़प रहा आँखों के आगे भूखा ....।

(A) पाकिस्तान (B) हिन्दुस्तान (C) अफगानिस्तान (D) रेगिस्तान

(2) .... वर्ष हो गये राह में अटका कहाँ स्वराज।

(A) दस (B) आठ (C) पाँच (D) सात

(3) अड़े रहे तो ऐरावत पत्तों से ....।

(A) उड़ जायेंगे (B) सड़ जायेंगे (C) बह जायेंगे (D) लहरायेंगे

(4) समर शेष है, शपथ धर्म की, लाना है वह ....।

(A) साल (B) काल (C) माल (D) थाल

(5) खंड-खंड हो गिरे विषमता की ....।

(A) काली जंजीर (B) सोने की जंजीर (C) चाँदी की जंजीर (D) लोहे की जंजीर

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- इस कविता को कंठस्थ कीजिए ।
- छात्र इस काव्य का कक्षा में सस्वर गान करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक वीररस के अन्य काव्यों का संकलन कराएँ।

●

10	# शत्रु

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(जन्म : सन् 1911 ई.; निधन : 1987 ई.)

बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार, कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार और साथ ही यात्रा-वृत्तांत के लेखक। 1929 में बी.एससी. करने के बाद एम.ए. में अंग्रेजी विषय रखा, मगर क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सेदारी के चलते पढ़ाई पूरी न हो सकी। हिंदी और अंग्रेज़ी की कई पत्रिकाओं का संपादन किया। प्रयोगवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। 1964 में 'आँगन के पार द्वार' पर साहित्य अकादेमी और 1979 में 'कितनी नावों पर कितनी बार' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

इनके उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' और 'नदी के द्वीप' बहुत चर्चित रहे। 'लौटती पगडंडियाँ' और 'छोड़ा हुआ रास्ता' के नाम से इनकी समग्र कहानियों का संकलन उपलब्ध है।

'शत्रु' एक प्रतीकात्मक नीतिकथा है। इसका चरित्र 'ज्ञान' सचमुच ज्ञान का प्रतीक प्रतीत होता है। वह जब मानव-जाति के 'शत्रु' से लड़ने के लिए निकलता है, तो क्रम से धर्म, समाज, विदेशी सरकार और भूख से लड़ने को तत्पर होता है। जब संसार बदलता नहीं है, बल्कि उसे दंडित करता है, तो वह आत्महत्या के लिए तैयार हो जाता है। तभी उसके भीतर से आवाज़ आती है, 'बस, अपनेआप से लड़ चुके ?' कहानी का निष्कर्ष यह निकलता है कि 'जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि हम निरंतर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं।'

ज्ञान को एक रात सोते समय भगवान् ने स्वप्न में दर्शन दिये और कहा—''ज्ञान, मैंने तुझे अपना प्रतिनिधि बनाकर संसार में भेजा है। उठो, संसार का पुनर्निर्माण करो।''

ज्ञान जाग पड़ा। उसने देखा, संसार अन्धकार में पड़ा है, और मानव-जाति उस अन्धकार में पथ-भ्रष्ट होकर विनाश की ओर बढ़ती चली जा रही है। वह ईश्वर का प्रतिनिधि है, तो उसे मानव-जाति को पथ पर लाना होगा, अन्धकार से बाहर खींचना होगा, उसका नेता बनकर उसके शत्रु से युद्ध करना होगा।

और वह इस तरह चौराहे पर खड़ा हो गया और सबको सुनाकर कहने लगा, ''मैं मसीह हूँ, पैगम्बर हूँ, भगवान का प्रतिनिधि हूँ। मेरे पास तुम्हारे उद्धार के लिए एक संदेश है।''

लेकिन किसी ने उसकी बात न सुनी। कुछ उसकी ओर देखकर हँस पड़ते, कुछ कहते, पागल है; अधिकांश कहते, यह हमारे धर्म के विरुद्ध शिक्षा देता है, नास्तिक है, इसे मारो। और बच्चे उसे पत्थर मारा करते।

आखिर तंग आकर वह एक अँधेरी गली में छिपकर बैठ गया, सोचने लगा। उसने निश्चय किया कि मानव-जाति का सबसे बड़ा शत्रु है धर्म; उसी से लड़ना होगा।

तभी पास कहीं से उसने स्त्री के करुण-क्रंदन की आवाज़ सुनी। उसने देखा, एक स्त्री भूमि पर लेटी है, उसके पास एक बहुत छोटा-सा बच्चा पड़ा है, जो या तो बेहोश है या मर चुका है, क्योंकि उसके शरीर में किसी प्रकार की गति नहीं है।

ज्ञान ने पूछा—''बहन, क्यों रोती हो ?''

उस स्त्री ने कहा—''मैंने एक विधर्मी से विवाह किया था। जब लोगों को इसका पता चला, तब उन्होंने उसे मार डाला और मुझे निकाल दिया। मेरा बच्चा भी भूख से मर रहा है।''

ज्ञान का निश्चय और दृढ़ हो गया। उसने कहा—''तुम मेरे साथ आओ, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।'' और उसे अपने साथ ले गया।

ज्ञान ने धर्म के विरुद्ध प्रचार करना शुरू किया। उसने कहा—''धर्म झूठा बन्धन है। परमात्मा एक है, अबाध है और धर्म से परे है। धर्म हमें सीमा में रखता है, रोकता है, परमात्मा से अलग रखता है, अत: हमारा शत्रु है।''

लेकिन किसी ने कहा—''जो व्यक्ति पराई और बहिष्कृत औरत को अपने साथ रखता है, उसकी बात हम क्यों सुनें।'' तब लोगों ने उसे समाजच्युत करके बाहर निकाल दिया।

*

ज्ञान ने देखा कि धर्म से लड़ने के पहले समाज से लड़ना है। जब तक समाज पर विजय नहीं मिलती, तब तक धर्म का खण्डन नहीं हो सकता।

तब वह इसी प्रकार का प्रचार करने लगा। वह कहने लगा—''ये धर्मध्वजी, ये पोंगे पुरोहित-मुल्ला, ये कौन हैं ? इन्हें क्या अधिकार है हमारे जीवन को बाँध रखने का ? आओ, हम इन्हें दूर कर दें, एक स्वतन्त्र समाज की रचना करें, ताकि हम उन्नति के पथ पर बढ़ सकें।''

तब एक दिन विदेशी सरकार के दो सिपाही आकर उसे पकड़ ले गए; क्योंकि वह वर्गों में परस्पर विरोध जगा रहा था।

*

ज्ञान जब जेल काटकर बाहर निकला, तब उसकी छाती में इन विदेशियों के प्रति विद्रोह धधक रहा था। यही तो हमारी क्षुद्रताओं को स्थायी बनाये रखते हैं, और उनसे लाभ उठाते हैं। पहले अपने को विदेशी प्रभुत्व से मुक्त करना होगा, तब समाज को तोड़ना होगा, तब—

और यह गुप्त रूप से विदेशियों के विरुद्ध लड़ाई का आयोजन करने लगा।

एक दिन उसके पास एक विदेशी आदमी आया ! वह मैले-कुचैले, फटे-पुराने; खाकी कपड़े पहने हुए था। मुख पर झुर्रियाँ पड़ी थीं, आँखों में एक तीखा दर्द था। उसने ज्ञान से कहा—''आप मुझे कुछ काम दें, ताकि मैं अपनी रोजी कमा सकूँ। मैं विदेशी हूँ, आपके देश में भूखा मर रहा हूँ। कोई भी काम मुझे दें, मैं करूँगा। आप परीक्षा लें। मेरे पास रोटी का टुकड़ा भी नहीं है।''

ज्ञान ने विवश होकर कहा—''मेरी दशा तुमसे अच्छी नहीं है, मैं भी भूखा हूँ।''

वह विदेशी एकाएक पिघल-सा गया। बोला—''अच्छा, मैं आपके दु:ख से बहुत दु:खी हूँ। मुझे अपना भाई समझें। यदि आपस में सहानुभूति हो, तो भूखे मरना मामूली-सी बात है। परमात्मा आपकी रक्षा करे। मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूँ।''

ज्ञान ने देखा कि विदेशी-देशी का प्रश्न तब उठता है, जब पेट भरा हो। सबसे पहला शत्रु तो यह भूख ही है। पहले भूख को जीतना होगा, तभी आगे कुछ सोचा जा सकेगा—

और उसने 'भूख' के लड़ाकों का एक दल बनाना शुरू किया, जिसका उद्देश्य था, अमीरों से धन छीनकर सबमें समान रूप से वितरण करना, भूखों को रोटी देना इत्यादि। लेकिन जब धनिकों को इस बात का पता चला,

तब उन्होंने एक दिन चुपचाप अपने चरों द्वारा उसे पकड़वा मँगवाया और एक पहाड़ी क़िले में क़ैद कर दिया। वहाँ एकान्त में वे उसे सताने के लिए नित्य एक मुट्ठी चबैना और एक लोटा पानी दे देते थे, बस।

धीरे-धीरे ज्ञान का हृदय ग्लानि से भरने लगा। जीवन उसे बोझ-सा जान पड़ने लगा। निरन्तर यह भाव उसके भीतर जगा करता कि मैं ज्ञान, परमात्मा का प्रतिनिधि इतना विविश हूँ कि पेट-भर रोटी का प्रबन्ध भी मेरे लिए असम्भव है ? यदि ऐसा है तो कितना व्यर्थ है यह जीवन, कितना छूँछा, कितना बेमानी !

एक दिन वह किले की दीवार पर चढ़ गया। बाहर खाई में भरा हुआ पानी देखते-देखते उसे एकदम से विचार आया, और उसने निश्चय कर लिया कि वह उसमें कूदकर प्राण खो देगा। परमात्मा के पास लौट कर प्रार्थना करेगा कि मुझे इस भार से मुक्त करो, मैं तुम्हारा प्रतिनिधि हूँ; लेकिन ऐसे संसार में मेरा स्थान नहीं है।

यह स्थिर, मुग्ध दृष्टि से खाई के पानी में देखने लगा। वह कूदने को ही था कि, एकाएक उसने देखा, पानी में उसका प्रतिबिम्ब झलक रहा है, मानो कह रहा है—''बस, अपने-आपसे लड़ चुके ?''

*

ज्ञान सहमकर रुक गया, फिर धीरे-धीरे दीवार पर से नीचे उतर आया और किले में चक्कर काटने लगा।

और उसने जान लिया कि जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि हम निरन्तर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

नास्तिक ईश्वर में विश्वास न रखने वाला **तंग** परेशान, हैरान **क्रंदन** रोना, रुदन **विधर्मी** दूसरे धर्म का व्यक्ति **बहिष्कृत** निष्कासित, समाज से निकाला गया **समाजच्युत** समाज से अलग, बहिष्कृत **विवश** मजबूर **दल** समूह **चर** सेवक, **ग्लानि** पश्चाताप **प्रतिबिम्ब** तसवीर, परछाईं **प्रबन्ध** व्यवस्था, इन्तजाम **एकाएक** सहसा, अचानक

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) ज्ञान को किसने दर्शन दिए ?

(2) ज्ञान ने चौराहे पर खड़े होकर क्या कहा ?

(3) मानव-जाति का सबसे बड़ा शत्रु क्या है ?

(4) सिपाही ज्ञान को पकड़कर क्यों ले गए ?

(5) ज्ञान के पास विदेशी आदमी क्यों आया ?

(6) ज्ञान पानी में क्यों नहीं कूदा ?

(7) जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई क्या है ?

2. संक्षेप में उत्तर दीजिए :

(1) ज्ञान ने स्वप्न में से जागकर क्या देखा ?

(2) बच्चे ज्ञान को पत्थर क्यों मारा करते थे ?

(3) स्त्री क्यों रो रही थी ?

(4) विदेशी आदमी ने ज्ञान से क्या कहा ?

(5) ''भूख'' के लड़ाकों का दल क्यों बनाया गया ?

(6) ज्ञान किले की दीवार पर चढ़कर क्या करना चाहता था ?

(7) ज्ञान ने धर्म के विरुद्ध प्रचार करते हुए क्या कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) लोग ज्ञान को पागल क्यों कहते थे ?

(2) स्त्री ने किससे विवाह किया था ? उसका क्या परिणाम हुआ ?

(3) ज्ञान कहाँ छिपकर बैठ गया ? उसने किसकी आवाज सुनी ?

(4) विदेशी आदमी की वेशभूषा कैसी थी ? उसने ज्ञान से क्या कहा ?

4. समानार्थी शब्द लिखिए :

पथ, संसार, पानी, अमीर।

5. विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

(1) पथ-भ्रष्ट, (2) समाजच्युत, (3) पेट-भर।

6. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विग्रह कीजिए :

परमात्मा, संसार, पुनर्निर्माण, व्यर्थ।

7. विरोधी शब्द लिखिए :

नास्तिक, अंधकार, शत्रु, धर्म, बहिष्कृत, विदेशी, विनाश, मामूली, विजय, उन्नति।

8. भाववाचक संज्ञा लिखिए :

बच्चा, पागल, व्यर्थ, स्त्री।

9. विशेषण बनाकर लिखिए :

विचार, विदेश, विवाह, धर्म, करुणा।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी स्वदेशी-विदेशी में अंतर समझें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- ''सभी समस्याओं का मूल भूख है'' समझाएँ।
- विद्यार्थियों को उनके कर्त्तव्यों के बारे में समझाएँ।

●

11 क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !

हरिवंशराय 'बच्चन'

(जन्म : सन् 1907 ई.; निधन : 2003 ई.)

हिन्दी के प्रसिद्ध और लोकप्रिय गीतकार हरिवंशराय 'बच्चन' जी का जन्म उत्तर प्रदेश के प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ था। हिन्दी के इस यशस्वी रचनाकार को विशिष्ट राष्ट्रीय – अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों और सम्मानों पद्मभूषण, सोवियत लैण्ड पुरस्कार, अकादमी पुरस्कार, के. के. बिड़ला फाउण्डेशन 'सरस्वती पुरस्कार' तथा एफ्रोएशियन लेखकों के 'लोटस पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। सन् 1996 में बच्चनजी को राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया था।

'आकुल अन्तर', 'निशा निमन्त्रण', 'मधुबाला', 'मधुशाला', 'मिलन यामिनी', 'सूत की माला', 'दो चट्टानें', 'प्रणय पत्रिका', 'बंगाल का अकाल', 'एकान्त संगीत', 'मधु कलश' आदि इनके काव्य संग्रह हैं। इसमें से मधुशाला इनकी अति प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचना है। गाँधीजी पर इन्होंने सबसे अधिक कविताएँ लिखीं हैं जो 'सूत की माला' और 'खादी के फूल' में संग्रहित हैं। इन्होंने अंग्रेजी नाटकों और उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद भी किया है।

प्रस्तुत कविता में कवि के मन में इतनी सारी यादें हैं कि उनको लेकर एक मधुर असमंजस में पड़ जाता है कि 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं !' बेशक उसके पास 'उन्मादों', 'अवसादों' के भी क्षण हैं। अंततः वह यह सोचने लगता है कि इन सुधियों के बंधन से कैसे 'अपने को आज़ाद करूँ मैं ?'

क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !
अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
अगणित अवसादों के क्षण हैं,
रजनी की सूनी घड़ियों को
किन-किन से आबाद करूँ मैं !
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !

याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से
अपने दिन बर्बाद करूँ मैं !
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !

दोनों करके पछताता हूँ,
सोच नहीं, पर मैं पाता हूँ,
सुधियों के बंधन से कैसे
अपने को आज़ाद करूँ मैं !
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !

शब्दार्थ-टिप्पण

उन्माद अत्यधिक अनुराग, पागलपन, सनक **अवसाद** उदासी, सुस्ती, शिथिलता **रजनी** रात्रि **घड़ी** पल, क्षण **आबाद** बसा हुआ, बस्तीवाला, सम्पन्न, खुशहाल, फलता-फूलता **सुधि** याद।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

(1) कवि की आँखों में आँसू कब आते हैं ?

(2) कवि का दिल भारी क्यों हो जाता है ?

(3) कवि को रात्रि-क्षण कैसे लगते हैं ?

(4) कवि किसके बंधन से आजाद होना चाहता है ?

2. प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) कवि के अगणित क्षण कैसे-कैसे हैं ?

(2) कवि के पछतावे के क्या कारण हैं ?

(3) सुख-दुख के विषय में कवि ने क्या कहा है ?

3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :

(1) रात्रि के एकांत पलों के बारे में कवि के विचार को अपने शब्दों में लिखिए।

4. काव्य पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

''याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से
अपने दिन बर्बाद करूँ मैं !
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !''

5. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

(1) रजनी की .... घड़ियों को।

(A) दूनी (B) सूनी (C) जूनी (D) लूनी

(2) अपने को .... करूँ मैं !

(A) बर्बाद (B) आज़ाद (C) आबाद (D) विवाद

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

रजनी, घड़ी, दिन, उन्माद।

7. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

सुख, आबाद, सुधि, बंधन।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- कंठस्थ करके कक्षा में इस काव्य का सस्वर गान करें।
- अपने छोटे भाई के नाम एक पत्र लिखें और अपने प्रवास के अनुभव का वर्णन करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक विद्यार्थियों से प्रेम-गीतों का संकलन करवाएँ।

●

12 एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

बचेन्द्रीपाल

(जन्म : सन् 1954 ई.)

इनका जन्म उत्तराखंड में हुआ। माउंट एवरेस्ट पर चढ़नेवाली ये प्रथम भारतीय महिला तथा विश्व की पाँचवीं महिला हैं। तमाम आर्थिक अभावों का सामना करते हुए इन्होंने जिस तरह पर्वतारोहण में साहस का परिचय दिया, वह महिलाओं के साहस का जीवंत प्रतीक बन गया। इन्हें 1984 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1986 में भारत सरकार ने अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया। इनके अलावा भी इन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए।

बचेन्द्री को पहाड़ों पर चढ़ने का चाव बचपन से ही था। लड़कियों को जब इस तरह के साहसिक अभियान के योग्य नहीं माना जाता था, तब उन्हें बहुत बुरा लगता था। उनकी 'शिखर यात्रा' ने साबित कर दिया कि लड़कों और लड़कियों के बीच भेद करना उचित नहीं है।

इस अभियान में उन्हें जो तकलीफ़ें उठानी पड़ीं, उनका बहुत ही मार्मिक चित्रण उन्होंने किया है। उनका सबसे बड़ा साहस यह है कि उन्होंने अपने भय को भी साहस के साथ स्वीकार किया है। कर्नल खुल्लर ने जब उनसे पूछा, 'क्या तुम भयभीत थीं ?' उन्होंने स्वीकार किया, 'जी हाँ !' और जब उनसे पूछा गया, 'क्या तुम वापस जाना चाहोगी ?' उन्होंने बिना हिचकिचाहट के जवाब दिया, 'नहीं।' और इस 'नहीं' की हिम्मत ने उन्हें एवरेस्ट पर विजय पानेवाली पहली भारतीय पर्वतारोहिणी होने का गौरव दिला दिया।

एवरेस्ट अभियान दल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से चल दिया। एक मज़बूत अग्रिम दल बहुत पहले ही चला गया था जिससे कि वह हमारे 'बेस कैंप' पहुँचने से पहले दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ़ कर सके।

नमचे बाज़ार, शेरपा लैंड का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। अधिकांश शेरपा इसी स्थान तथा यहीं के आसपास के गाँवों के होते हैं। यह नमचे बाज़ार ही था, जहाँ से मैंने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जो नेपालियों में 'सागरमाथा' के नाम से प्रसिद्ध है। मुझे यह नाम अच्छा लगा।

एवरेस्ट की तरफ़ गौर से देखते हुए, मैंने एक भारी बर्फ़ का बड़ा फूल (प्लूम) देखा, जो पर्वत-शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था। मुझे बताया गया कि यह दृश्य शिखर की ऊपरी सतह के आसपास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलने के कारण बनता था, क्योंकि तेज़ हवा से सूखा बर्फ़ पर्वत पर उड़ता रहता था। बर्फ़ का यह ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी लंबा हो सकता था। शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफ़ानों को झेलना पड़ता था, विशेषकर खराब मौसम में। यह मुझे डराने के लिए काफ़ी था, फिर भी मैं एवरेस्ट के प्रति विचित्र रूप से आकर्षित थी और इसकी कठिनतम चुनौतियों का सामना करना चाहती थी।

जब हम 26 मार्च को पैरिच पहुँचे, हमें हिम-स्खलन के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दु:खद समाचार मिला। खुंभु हिमपात पर जानेवाले अभियान-दल के रास्ते के बाईं तरफ़ सीधी पहाड़ी के धसकने से, ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी बर्फ़ की चट्टान नीचे खिसक आई थी। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे।

इस समाचार के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाए अवसाद को देखकर हमारे नेता कर्नल खुल्लर ने स्पष्ट किया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए ।

उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैंप-एक (6000 मी.), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ़ की नदी है और बर्फ़ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

'बेस कैंप' में पहुँचने से पहले हमें एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु अनुकूल न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से हम आशाजनक स्थिति में नहीं चल रहे थे।

एवरेस्ट शिखर को मैंने पहले दो बार देखा था, लेकिन एक दूरी से। बेस कैंप पहुँचने पर दूसरे दिन मैंने एवरेस्ट पर्वत तथा उसकी अन्य श्रेणियों को देखा। मैं भौंचक्की होकर खड़ी रह गई और एवरेस्ट, ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी, बर्फ़ीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

हिमपात अपने आपमें एक तरह से बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही था। हमें बताया गया कि ग्लेशियर के बहने से अकसर बर्फ़ में हलचल हो जाती थी, जिससे बड़ी-बड़ी बर्फ़ की चट्टानें तत्काल गिर जाया करती थीं और अन्य कारणों से भी अचानक प्रायः खतरनाक स्थिति धारण कर लेती थीं। सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विवर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज़्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रवास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

दूसरे दिन नए आनेवाले अपने अधिकांश सामान को हम हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ. मीनू मेहता ने हमें एल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लट्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और हमारे अग्रिम दल के अभियांत्रिकी कार्यों के बारे में हमें विस्तृत जानकारी दी।

तीसरा दिन हिमपात से कैंप-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए निश्चित था। रीता गोंबू तथा मैं साथ-साथ चढ़ रहे थे। हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था, जिससे हम अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब हमने उन्हें पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैंप-एक पर पहुँचनेवाली केवल हम दो ही महिलाएँ थीं।

अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिस्सा अंततः साउथ कोल पहुँच गए और 29 अप्रैल को 7900 मीटर पर उन्होंने कैंप-चार लगाया। यह संतोषजनक प्रगति थी।

जब अप्रैल में मैं बेस कैंप में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ हमारे पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। जब मेरी बारी आई, मैंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि मैं बिलकुल ही नौसिखिया हूँ और एवरेस्ट मेरा पहला अभियान है । तेनजिंग हँसे और मुझसे कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ मेरे

कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा, ''तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।''

15-16 मई, 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन मैं ल्होत्से की बर्फ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैंप-तीन में थी। कैंप में 10 और व्यक्ति थे। लोपसांग, तशारिंग मेरे तंबू में थे, एन.डी. शेरपा तथा और आठ अन्य शरीर से मज़बूत और ऊँचाइयों में रहनेवाले शेरपा दूसरे तंबुओं में थे। मैं गहरी नींद में सोई हुई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग मेरे सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सख्त चीज़ के टकराने से मेरी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ। तभी मुझे महसूस हुआ कि एक ठंडी, बहुत भारी कोई चीज़ मेरे शरीर पर से मुझे कुचलती हुई चल रही है। मुझे साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी।

यह क्या हो गया था ? एक लंबा बर्फ़ का पिंड हमारे कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका विशाल हिमपुंज बन गया था। हिमखंडों, बर्फ़ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ़ के इस विशालकाय पुंज ने, एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज़ गति और भीषण गर्जना के साथ, सीधी ढलान से नीचे आते हुए हमारे कैंप को तहस-नहस कर दिया। वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी थी। यह एक आश्चर्य था कि किसी की मृत्यु नहीं हुई थी।

लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से हमारे तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे और तुरंत ही अत्यंत तेज़ी से मुझे बचाने की कोशिश में लग गए। थोड़ी-सी भी देर का सीधा अर्थ था मृत्यु। बड़े-बड़े हिमपिंडों को मुश्किल से हटाते हुए उन्होंने मेरे चारों तरफ़ की कड़े जमे बर्फ़ की खुदाई की और मुझे उस बर्फ़ की कब्र से निकाल बाहर खींच लाने में सफल हो गए।

सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक हम प्रायः सभी कैंप-दो पर पहुँच गए थे। जिस शेरपा की टाँग की हड्डी टूट गई थी, उसे एक खुद के बनाए स्ट्रेचर पर लिटाकर नीचे लाए। हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में, ''यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक ज़बरदस्त साहसिक कार्य था।''

सभी नौ पुरुष सदस्यों को चोटों अथवा टूटी हड्डियों आदि के कारण बेस कैंप में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर मेरी तरफ़ मुड़कर कहने लगे, ''क्या तुम भयभीत थीं ?''

''जी हाँ।''

''क्या तुम वापिस जाना चाहोगी ?''

''नहीं'', मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।

जैसे ही मैं साउथ कोल कैंप पहुँची, मैंने अगले दिन की अपनी महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। मैंने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए। जब दोपहर डेढ़ बजे बिस्सा आया, उसने मुझे चाय के लिए पानी गरम करते देखा। की, जय और मीनू अभी बहुत पीछे थे। मैं चिंतित थी क्योंकि मुझे अगले दिन उनके साथ ही चढ़ाई करनी थी। वे धीरे-धीरे आ रहे थे क्योंकि वे भारी बोझ लेकर और बिना ऑक्सीजन के चल रहे थे ।

दोपहर बाद मैंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। मैंने बर्फ़ीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। जैसे ही मैं कैंप क्षेत्र से बाहर आ रही थी मेरी मुलाकात मीनू से हुई। की और जय अभी कुछ पीछे थे। मुझे जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने कृतज्ञतापूर्वक चाय वगैरह पी लेकिन मुझे और आगे जाने

से रोकने की कोशिश की। मगर मुझे की से भी मिलना था। थोड़ा-सा और आगे नीचे उतरने पर मैंने की को देखा। वह मुझे देखकर हक्का-बक्का रह गया।

''तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेन्द्री ?''

मैंने उसे दृढ़तापूर्वक कहा, ''मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ, इसीलिए इस दल में आई हूँ। शारीरिक रूप से मैं ठीक हूँ। इसलिए मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद क्यों नहीं करनी चाहिए।'' की हँसा और उसने पेय पदार्थ से प्यास बुझाई, लेकिन उसने मुझे अपना किट ले जाने नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद साउथ कोल कैंप से ल्हाटू और बिस्सा हमें मिलने नीचे उतर आए। और हम सब साउथ कोल पर जैसी भी सुरक्षा और आराम की जगह उपलब्ध थी, उस पर लौट आए। साउथ कोल 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर' जगह के नाम से प्रसिद्ध है।

अगले दिन मैं सुबह चार बजे उठ गई। बर्फ़ पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चॉकलेट का हलका नाश्ता करने के बाद मैं लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। अंगदोरजी बाहर खड़ा था और कोई आसपास नहीं था।

अंगदोरजी बिना ऑक्सीजन के ही चढ़ाई करनेवाला था। लेकिन इसके कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। इसलिए वह ऊँचाई पर लंबे समय तक खुले में और रात्रि में शिखर कैंप पर नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसे या तो उसी दिन चोटी तक चढ़कर साउथ कोल पर वापस आ जाना था अथवा अपने प्रयास को छोड़ देना था।

वह तुरंत ही चढ़ाई शुरू करना चाहता था... और उसने मुझसे पूछा, क्या मैं उसके साथ जाना चाहूँगी ? एक ही दिन में साउथ कोल से चोटी तक जाना और वापस आना बहुत कठिन और श्रमसाध्य होगा। इसके अलावा यदि अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ गए तो उसके लौटकर आने का भी जोखिम था। मुझे फिर भी अंगदोरजी पर विश्वास था और साथ-साथ मैं आरोहण की क्षमता और कर्मठता के बारे में आश्वस्त थी। अन्य कोई भी व्यक्ति इस समय साथ चलने के लिए तैयार नहीं था।

सुबह 6.20 पर जब अंगदोरजी और मैं साउथ कोल से बाहर आ निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकी-हलकी हवा चल रही थी, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। मैं अपने आरोही उपस्कर में काफ़ी सुरक्षित और गरम थी। हमने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और मुझे भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

जमे हुए बर्फ़ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, मानो शीशे की चादरें बिछी हों। हमें बर्फ़ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और मुझे इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ़ की धरती को फावड़े के दाँते काट सकें। मैंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोच-समझकर उठाया ।

दो घंटे से कम समय में ही हम शिखर कैंप पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और मुझसे कहा कि क्या मैं थक गई हूँ। मैंने जवाब दिया, ''नहीं।'' जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और आनंदित हुए । उन्होंने कहा कि पहलेवाले दल ने शिखर कैंप पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि हम इसी गति से चलते रहे तो हम शिखर पर दोपहर एक बजे तक पहुँच जाएँगे।

ल्हाटू हमारे पीछे-पीछे आ रहा था और जब हम दक्षिणी शिखर के नीचे आराम कर रहे थे, वह हमारे पास पहुँच गया। थोड़ी-थोड़ी चाय पीने के बाद हमने फिर चढ़ाई शुरू की। ल्हाटू एक नायलॉन की रस्सी लाया था।

इसलिए अंगदोरजी और मैं रस्सी के सहारे चढ़े, जबकि ल्हाटू एक हाथ से रस्सी पकड़े हुए बीच में चला। उसने रस्सी अपनी सुरक्षा की बजाय हमारे संतुलन के लिए पकड़ी हुई थी। ल्हाटू ने ध्यान दिया कि मैं इन ऊँचाइयों के लिए सामान्यत: आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मिनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। मेरे रेगुलेटर पर जैसे ही उसने ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, मुझे महसूस हुआ कि सपाट और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी।

दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ़ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी। अनेक बार देखा कि केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है।

मेरी साँस मानो रुक गई थी। मुझे विचार कौंधा कि सफलता बहुत नज़दीक है। 23 मई, 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर मैं एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाली मैं प्रथम भारतीय महिला थी।

एवरेस्ट शंकु की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हज़ारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए हमारे सामने प्रश्न सुरक्षा का था। हमने पहले बर्फ़ के फावड़े से बर्फ़ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से स्थिर किया। इसके बाद, मैं अपने घुटनों के बल बैठी, बर्फ़ पर अपने माथे को लगाकर मैंने 'सागरमाथे' के ताज का चुंबन लिया। बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला । मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता-पिता का ध्यान आया।

जैसे मैं उठी, मैंने अपने हाथ जोड़े और मैं अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया और मुझे लक्ष्य तक पहुँचाया। मैंने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने मुझे गले से लगाया और मेरे कानों में फुसफुसाया, ''दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। मैं बहुत प्रसन्न हूँ !''

कुछ देर बाद सोनम पुलजर पहुँचे और उन्होंने फोटो लेने शुरू कर दिए।

इस समय तक ल्हाटू ने हमारे नेता को एवरेस्ट पर हम चारों के होने की सूचना दे दी थी। तब मेरे हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर हमारी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। मुझे बधाई देते हुए उन्होंने कहा, ''मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा !'' वे बोले कि देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा !

शब्दार्थ-टिप्पण

दुर्गम कठिन **अवसाद** दु:ख, खेद, विषाद **जोखिम** खतरा **अनूठी** विशिष्ट, अनोखी **आरोहण** चढ़ाई **कर्मठ** उद्यमी **धसकना** धंस जाना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) लेखिका को सागरमाथा नाम क्यों अच्छा लगा ?

(2) सागरमाथा अर्थात् क्या ?

(3) पर्वतारोहण में अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था ?

(4) लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी ?

(5) मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा ?

(6) रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई ?

(7) कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) लेखिका को एवरेस्ट नजदीक से कैसा लगा ?

(2) हिमपात और हिमस्खलन में क्या अंतर है ?

(3) लोपसांग ने तंबू का रास्ता कैसे साफ किया ?

(4) उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया ?

(5) लेखिका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया ?

(6) ग्लेशियर किसे कहते हैं ?

(7) लेखिका के तंबू में गिरे बर्फ पिंड का वर्णन किस प्रकार किया गया है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के आठ-दस वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) डॉ. मीनू मेहता ने किसको क्या जानकारियाँ दीं ?

(2) तेनजिंग ने बचेन्द्रीपाल की तारीफ में क्या कहा ?

(3) हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं ?

(4) लेखिका के सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

(2) बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए, लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ में दबा दिया।

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए :

वॉकी-टॉकी, गहरे-चौड़े, टेढ़ी-मेढ़ी, इधर-उधर, लंबे-चौड़े, आस-पास, हक्का-बक्का।

6. निम्नलिकित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

दुर्गम, अवसाद, व्यर्थ, खतरनाक, मुश्किल, कृतज्ञता, अनूठी।

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

नियमित, विख्यात, आरोही, निश्चित, सुंदर, दुर्गम।

8. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

पर्वतारोही, देवालय, कक्षानुसार, परमानंद।

9. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करके समास-भेद लिखिए :

पूजा-अर्चना, आड़ी-तिरछी, विशालकाय, हिमपिंड, देवालय।

10. निम्नलिखित शब्दों में इक, इत या इय प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाइए :

सुरक्षा, नियम, आनंद, प्रोत्साहन, नगर, आकर्षण, पर्वत, चिंता, शरीर।

11. सही विकल्प चुनकर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) बचेन्द्री को बचाने में थोड़ी-सी भी देर का सीधा अर्थ था ....।

(A) जीवन (B) मृत्यु (C) सागर (D) संयोग

(2) 'क्या तुम वापस जाना चाहोगी ?' कौन किससे कहता है ?

(A) मीनू जय से (B) बिस्सा बचेन्द्री से

(C) बचेन्द्री शेरपा से (D) कर्नल खुल्लर बचेन्द्री से

(3) एक लंबा .... हमारे कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था।

(A) बर्फ का पिंड (B) लकड़ी का टुकड़ा (C) पत्थर (D) ऑक्सीजन सिलिण्डर

(4) हमें हिम-स्खलन के कारण हुई एक .... की मृत्यु दुःखद समाचार मिला।

(A) शेरपा कुली (B) यात्री (C) महिला साथी (D) पर्वतवासी

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- वर्ग में अपने प्रवास के अनुभव की चर्चा कीजिए।
- पर्वतीय सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'पावागढ़' के प्रवास का आयोजन कीजिए।
- प्रवास से पूर्ण पर्वतीय-स्थल में रखी जाने वाली सावधानियों से अवगत कराइए।

●

13 मैं तुम लोगों से दूर हूँ

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

(जन्म : सन् 1917 ई.; निधन : 1964 ई.)

आधुनिक हिन्दी के इस अद्वितीय साहित्यकार का जन्म मध्य प्रदेश के श्योपुर में हुआ था । पिता का नाम माधवराव और माता का नाम पार्वतीबाई था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उज्जैन में हुई। 1938 में बी.ए. पास करने के बाद मॉर्डन स्कूल में अध्यापक हो गए। एम.ए. करने के बाद कॉलेज में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए। बड़े ही लाड-प्यार से पले-बढ़े मुक्तिबोध का शेष जीवन अभाव, संघर्ष और विपन्नता में कटा। मुक्तिबोध अत्यन्त अध्ययनशील थे। आर्थिक संकट कभी भी इनकी अध्ययनशीलता में बाधा नहीं बन पाया। राजनाद गाँव इनका अध्यापन क्षेत्र ही नहीं बल्कि अध्ययन-क्षेत्र भी था। यहाँ रहते हुए इन्होंने अंग्रेजी, फ्रेंच तथा रूसी उपन्यासों के साथ, जासूसी उपन्यासों, वैज्ञानिक उपन्यासों, विभिन्न देशों के इतिहास तथा विज्ञान-विषयक साहित्य का गहन अध्ययन किया। इस अध्ययन के फलस्वरूप सन् 1962 में इनकी अन्तिम रचना 'भारत : इतिहास और संस्कृति' प्रकाशित हुई। इन्होंने कहानी, कविता, निबंध, आलोचना तथा इतिहास विधाओं में सृजन किया है। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' इनका प्रसिद्ध एवं बहुचर्चित काव्य संग्रह है। 'काठ का सपना', 'विपात्र' तथा 'सतह से उठता आदमी' इनके कहानी संग्रह हैं। मरणोपरान्त प्रकाशित 'मुक्तिबोध रचनावली' (छः भाग) में इनका संपूर्ण साहित्य संकलित है।

प्रस्तुत कविता में एक ग़रीब आम आदमी और एक संपन्न ख़ास आदमी के बीच अंतर ही नहीं दिखाया गया है, बल्कि आम आदमी को अपनी मेहनत पर और ढेरों मेहनत करनेवाले लोगों पर गर्व करते हुए भी दिखाया गया है। अपनी सारी बुरी हालत के बावजूद ग़रीब मज़दूर अपने ख़ून को पसीना बनाकर बहाता रहता है, इसीलिए वह शोषण करनेवाले संपन्न आदमी को गर्व के साथ संबोधित करते हुए कह सकता है, 'मैं तुम लोगों से दूर हूँ।'

मैं तुम लोगों से इतना दूर हूँ
तुम्हारी प्रेरणाओं से मेरी प्रेरणा इतनी भिन्न हैं
कि जो तुम्हारे लिए विष है, मेरे लिए अन्न है।

मेरी असंग स्थिति में चलता-फिरता साथ है,
अकेले में साहचर्य का हाथ है,
उनका जो तुम्हारे द्वारा गर्हित हैं,
किन्तु वे मेरी व्याकुल आत्मा में बिम्बित हैं, पुरस्कृत हैं
इसीलिए, तुम्हारा मुझ पर सतत आघात है !!
सबके सामने और अकेले में।
(मेरे रक्तभरे महाकाव्यों के पन्ने उड़ते हैं
तुम्हारे-हमारे इस सारे झमेले में)

असफलता का धूल-कचरा ओढ़े हूँ
इसलिए कि वह चक्करदार जीनों पर मिलती है
छल-छद्म धन के

किन्तु मैं सीधी-सादी पटरी-पटरी दौड़ा हूँ
जीवन की।
फिर भी, मैं अपनी सार्थकता में खिन्न हूँ
निज से अप्रसन्न हूँ
इसलिए कि जो है उससे बेहतर चाहिए
पूरी दुनिया साफ करने के लिए मेहतर चाहिए
वह मेहतर मैं हो नहीं पाता
पर, रोज कोई भीतर चिल्लाता है
कि कोई काम बुरा नहीं
बशर्ते कि आदमी खरा हो
फिर भी मैं उस ओर अपने को ढो नहीं पाता।

रेफ्रीजरेटरों, विटैमिनों, रेडियोग्रैमों के बाहर की
गतियों की दुनिया में
मेरी वह भूखी बच्ची मुनिया है शून्यों में
पेटों की आँतों में न्यूनों की पीड़ा है
छाती के कोषों में रहितों की व्रीड़ा है!
शून्यों से घिरी हुई पीड़ा ही सत्य है
शेष सब अवास्तव अयथार्थ मिथ्या है भ्रम है
सत्य केवल एक जो कि
दु:खों का क्रम है।
मैं कनफटा हूँ हेठा हूँ
शेव्रलेट-डॉज के नीचे मैं लेटा हूँ
तेलिया लिबास में पुरजे सुधारता हूँ
तुम्हारी आज्ञाएँ ढोता हूँ।

शब्दार्थ-टिप्पण

साहचर्य साथ रहना, संगति **गर्हित** निंदित, बुरा, दूषित **बिम्बित** प्रतिबिम्बित **आघात** चोट **व्रीड़ा** लज्जा, संकोच **मिथ्या** झूठ **कनफटा** गोरखपंथी साधु जिनके कान फटे हों **हेठा** नीच, हीन **लिबास** पोशाक **न्यून** हीन, कम।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि किसका धूल-कचरा ओढ़े है ?
(2) पूरी दुनिया साफ करने के लिए कवि क्या बनना चाहता है ?
(3) कवि ने किसे 'सत्य' कहा है ?
(4) पेट की आँतों में किसकी पीड़ा है ?

2. **दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(1) सत्य और मिथ्या के बारे में 'मुक्तिबोध' क्या कहते हैं ?

(2) तेलिया लिबास में आम आदमी क्या-क्या करता है ?

(3) 'मैं' और 'तुम' किन-किन वर्गों के प्रतीक हैं ?

3. **प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :**

(1) कवि अपनी सार्थकता से क्यों खिन्न है ?

(2) इस कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

4. **काव्य-पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :**

''शून्यों से घिरी हुई पीड़ा ही सत्य है
शेष सब अवास्तव अयथार्थ मिथ्या है भ्रम है
सत्य केवल एक जो कि
दु:खों का क्रम है।''

5. **काव्य के आधार पर सही विकल्प चुनकर खाली जगह दिए :**

(1) अकेले में साहचर्य का .... है।
(A) साथ (B) हाथ (C) माथ (D) नाथ

(2) कि जो तुम्हारे लिए विष है, मेरे लिए .... है।
(A) अन्न (B) भिन्न (C) सन्न (D) दन्न

(3) शून्यों से घिरी हुई पीड़ा ही .... है।
(A) असत्य (B) सत्य (C) गत्य (D) मत्य

(4) पर, रोज कोई भीतर .... है।
(A) गरजता (B) चिल्लाता (C) काँपता (D) रोता

6. (i) **समानार्थी शब्द लिखिए :**
लिबास, सतत, व्याकुल, दुनिया, पीड़ा।

(ii) **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :**
सत्य, संग, विष, निज, वास्तव, मिथ्या।

(iii) **भाववाचक संज्ञा बनाइए :**
घन, बुरा, भिन्न, व्याकुल।

(iv) **वर्तनी शुद्ध कीजिए :**
प्ररेणा, व्याकूल, मीथ्या, तेलीया।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- छात्र कक्षा में काव्य का पठन करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'मुक्तिबोध' की कुछ अन्य कविताएँ विद्यार्थियों से संकलित करवाएँ।

●

14 डायरी का एक पन्ना

मोहन राकेश

(जन्म : सन् 1925 ई.; निधन : 1972 ई.)

इनका जन्म पंजाब के अमृतसर ज़िले में हुआ। इनका मूल नाम मदन मोहन गुगलानी था। 'नयी कहानी आंदोलन' के प्रमुख नायकों में से एक रहे। कहानी की पत्रिका 'सारिका' का संपादन किया। भारत-विभाजन की पीड़ा की अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'मलबे का मालिक' जैसी कहानी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इनका उपन्यास 'अँधेरे बंद कमरे' मध्यवर्गीय जीवन का महाकाव्य कहा जा सकता है। 'आषाढ़ का एक दिन' केवल इनके ही नहीं हिंदी के भी श्रेष्ठ नाटकों में से एक गिना जाता है। 1968 में इन्हें 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

मोहन राकेश की 'डायरी का एक पन्ना' ऐसा हिस्सा है, जिसमें उन्होंने बड़े खुलेपन के साथ स्वीकार किया है, 'मैंने अपने आज तक के जीवन में जिस सबसे महान व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त किया है, वह मेरी माँ है।' उनकी माँ बहुत कर्मठ थीं, लेकिन अपनी कर्मण्यता का उन्हें ज़रा भी अहंकार नहीं था। उनमें इतना भोलापन था कि मोहन राकेश या उनके पिता उन्हें 'अन्नपूर्णा' क्यों कहते थे, यह भी उनकी समझ में नहीं आता था।

जालंधर : 2-9-58

वृक्ष हवा में सिर मारते हैं तो क्या वह हवा का दबाव मात्र ही होता है या उसमें वृक्ष की अपनी भी कुछ प्रतिक्रिया होती है-उसके अपने रोमांच की अभिव्यक्ति ? विश्वास नहीं होता कि यह केवल हवा का गणित ही है जो वृक्ष की पत्ती-पत्ती को उस उन्मादी स्थिति में ला देता है।

मैंने अपने आज तक के जीवन में जिस सबसे महान व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त किया है, वह मेरी माँ है।

यह भावुकता नहीं है। मैंने बहुत बार तटस्थ रूप में इस नारी को समझने का प्रयत्न किया है और हर बार मेरे छोटेपन ने मुझे लज्जित कर दिया है।

बड़े से बड़े दु:ख में मैंने उसे अविचल धैर्य में स्थिर रहते देखा है। जीवन की किसी भी परिस्थिति ने उसे कर्तव्य निष्ठा से नहीं हटाया। परन्तु अपनी कर्मण्यता के लिए रत्ती भर अहंभाव तो उसमें नहीं है। वह कर्म करती है, जैसे कर्म उसका अस्तित्व है, जीवन है, स्वभाव है। वह जो नहीं कर पाती उसका उसे खेद अवश्य होता है, पर जो कर लेती है, उसका गर्व नहीं। और घर में उसका अस्तित्व वैसे ही है जैसे विश्व में वायु का-वह प्राण देती है, परन्तु अदृश्य रहकर। घर में सब कुछ संभला-सिमटा रहता है-हर चीज व्यवस्थित रहती है-परन्तु माँ कुछ भी करने के लिए वही समय चुनती है जब 'वह करना' किसी को दिखाई न दे। कल रात ही साढ़े ग्यारह बजे मेरी मेज़ झाड़ने और ठीक करने लगी थी। मैं उस पर खीझ उठा, और वह मेरे खीझने से भी दु:खी नहीं हुई और वत्सल हो उठी।

''तू तो मुझे कोई काम करने ही नहीं देता। सुबह तेरी मेज़ पर चीजें इधर-उधर बिखरी होंगी तो तेरा बैठकर काम करने को जी नहीं करेगा।''

मैं झल्लाता रहा और वह मेरे सिर पर हाथ फेरती रही।

''माँ की मूर्खता पर गुस्से नहीं होते। तुझे तो पता है कि तेरी माँ दिल से कुछ बुरा करना नहीं चाहती। इसलिए कुछ गलत हो जाय तो दु:खी मत हुआ कर। ला तेरे सिर में तेल डाल दूँ। दिन भर काम करता है इसलिए थक जाता है।''

समझ में नहीं आता कि यह नारी अपने शरीर में जीती है या अपने में बाहर ही जीती है। अपना शारीरिक दु:ख, श्रान्ति, रोग सब कुछ उसे महत्त्वहीन प्रतीत होता है।

बहुत बार तंगी आई है। पिताजी की मृत्यु के बाद तो बहुत ही बुरे दिन देखे थे। फिर बीच में मैंने दो-तीन बार बेकारी काटी। फिर भी माँ थोड़े से साधनों से भी वही रोटी मेरी थाली में मुझे देती रही। कटौतियाँ बहुत होती थीं-मगर पहले अपने शरीर और पेट पर, फिर बहन के कपड़े और खाने पर, फिर छोटे भाई पर-लेकिन मुझ पर नहीं ।

''इसका कारण आर्थिक है। क्योंकि तुम बड़े बेटे हो और वह तुम पर निर्भर करती है।'' ऐसा भी सुना है । पर क्या कारण आर्थिक है ? क्या वह मुझ पर निर्भर करती है ? क्या उसकी रात-दिन की तपस्या आर्थिक निर्भरता है ?

''माँ, तू अन्नपूर्णा है।'' एक बार मैंने कहा था।

उसकी, आँखें भर आई। बड़े भोलेपन से उसने पूछा, ''किस बात पर तू ऐसा कहता है ?.... तेरे बाबूजी भी एक बार यही कहते थे।.... किस बात पर ?...''

मेरे विवाहित जीवन में तुमने दोहरा torture सहा है। उधर उसके पास रहकर एक नौकरानी का-सा व्यवहार सहते हुए और मेरे पास आकर मेरे कराहने और छटपटाने को देखते हुए। फिर भी अपनी ओर से यह कभी उसकी शिकायत मुँह पर नहीं लाई। और अब अन्तिम दिनों में अपने से हुए व्यवहार की बात कही भी तो मुझसे नहीं कही-कौशल्या भाभी से कही।

''मैं कहती थी मेरा बेटा पहले ही दु:खी है, मैं उसे दु:खी क्यों करूँ ?''

और शीला इस नारी के सम्बन्ध में कहती थी, ''उसे बहुत जबर्दस्त inferiority complex है। हम में यही बुराई है कि हम तुम्हारी माँ की तरह inferiority complex के शिकार नहीं हैं।''

और वह inferiority complex की शिकार नारी इस समय भी अपने कमरे में बत्ती जलाकर लेटी है, सोई नहीं-हालांकि आज दिनभर काम करती रही है-क्षण भर के लिए भी विश्राम नहीं कर सकी। कारण जानता हूँ। मैंने अभी ईसबगोल का छिलका नहीं खाया।

इस साढ़े चार फुट की काया में भावना के अतिरिक्त और भी कुछ है।

दिन भर मेह बरसता रहा। पिंजरे में बन्द शेर की तरह कमरे में टहलता रहा - 'मिस पाल' शीर्षक कहानी दोबारा टाइप करता रहा। दिन में सोया भी नहीं, काम भी करता रहा, फिर भी नींद क्यों नहीं आई।

शब्दार्थ-टिप्पण

उन्मादी पागलपन की स्थिति **रत्तीभर** थोड़ा, बहुत कम **श्रांति** थकान **द्वेष** शत्रुता **स्पर्धा** प्रतियोगिता **तंगी** कमी **चंद** थोड़ी - सी, कुछ **गर्व** घमंड, अभिमान

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) हवा का वृक्षों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(2) लेखक के लिए सबसे महान व्यक्तित्व कौन है ?

(3) घर में माँ का अस्तित्व किसके जैसा है ?

(4) लेखक के बुरे दिनों की शुरुआत कब हुई ?

(5) माँ देर रात तक भी क्यों नहीं सोई थी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) माँ लेखक की मेज कब साफ करती हैं ? क्यों ?

(2) लेखक के झल्लाने पर माँ ने क्या कहा ?

(3) लेखक ने माँ को अन्नपूर्णा क्यों कहा है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए :

(1) वायु के झोंके से हिलते वृक्ष को देखकर लेखक क्या सोचता है ?

(2) माँ काम करने का जो समय चुनती है, उसके बारे में लेखक का क्या विचार है ?

(3) तंगी के दिनों में माँ के व्यवहार के बारे में लेखक ने क्या निरीक्षण किया है ?

(4) लेखक के दुखद वैवाहिक जीवन के निजी कटु अनुभवों की बात माँ कौशल्या भाभी से क्यों कहती हैं ? लेखक से क्यों नहीं ?

4. भाववाचक संज्ञा बनाइए :

नारी, मूर्ख, बुरा, छोटा, भावुक।

5. विशेषण बनाइए :

शरीर, कटुता, गणित, लज्जा।

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

वृक्ष, हवा, माँ, नारी, आँख, शरीर, तंगी।

7. विरोधी शब्द लिखिए :

दुख, श्रांति, निर्भरता, जीवन, बुराई, बिखरना, अस्तित्व।

8. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) माँ, तू अन्नपूर्णा है।

(2) मैं झल्लाता रहा और वह मेरे सिर पर हाथ फेरती रही।

9. मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :

सिर पर हाथ फेरना

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी दैनंदिनी (डायरी) लिखने की आदत डालें।
- माँ की ममता पर दस वाक्य लिखें

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक वर्गखण्ड में दैनंदिनी का महत्त्व समझाएँ।
- शिक्षक माँ की महिमा पर कक्षा में चर्चा करें।

●

15	# विश्वशांति

उमाशंकर जोशी

(जन्म : सन् 1911 ई.; निधन : 1988 ई.)

गुजराती के मूर्धन्य साहित्यकार उमाशंकर जोशी का जन्म साबरकांठा जिले में ईडर के पास बामणा में हुआ था । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बामणा तथा ईडर में हुई। एम.ए. की शिक्षा इन्होंने मुम्बई विश्वविद्यालय से प्राप्त की। कॉलेज के दौरान सन् 1930 में पढ़ाई छोड़कर ये स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ गये। कई बार जेल भी जाना पड़ा। इसी दौरान इनकी भेंट काकासाहेब कालेलकर से हुई। इन्होंने गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति तथा विश्वभारती, शांतिनिकेतन के आचार्य के पद पर भी अपनी सेवाएँ दी।

गुजराती साहित्य को अपनी लेखनी, अपनी कला से समृद्ध और सम्पन्न करनेवाले इस सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न कवि ने कविता, कहानी, नाटक, समीक्षा, निबंध आदि विधाओं में साधिकार लेखनी चलाई है। 'विश्वशांति', 'गंगोत्री', 'वसंत वर्षा', 'प्राचीना', 'सप्तपदी' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्यकृतियाँ हैं। 'श्रावणी मेलो', 'विसामो' इनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं। 'निशीथ' काव्य-संग्रह पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'सापना भारा' एकांकी-संग्रह 'पारका जण्यां' उपन्यास के अतिरिक्त अनेक आलोचना-ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। राष्ट्रीय साहित्य अकादेमी, दिल्ली के अध्यक्ष रह चुके हैं।

प्रस्तुत काव्यांश में कवि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मंत्र की सार्थकता को सिद्ध करते हैं। यह धरा सभी के लिए है। सुख, शांति तभी स्थापित हो पाएगी जब सभी एक दूसरे के अस्तित्व के महत्व को समझते हुए उसे स्वीकार करेंगे, चाहे मनुष्य हो या अन्य जीव यह गुजराती कविता का हिन्दी अनुवाद है।

विशाल जग विस्तार में नहीं है केवल मनुष्य ही;
पशु हैं, पंखी हैं, हैं पुष्प और वनों की वनस्पति।
बेधे जाते हैं पुष्प अनेक बाग के।
नोचे जाते हैं पंख सुरम्य पंखी के।
काटी जाती है मूक जीवों की काया।
आहत होते हैं कानन के कलेवर।
रोती है प्रकृति माता, टपकते हैं दिल के दु:ख;

अमृत पीकर जो नहीं अघाते, कपूत बहाते रहते रक्त !
पत्र और पुष्प की पंखुड़ियाँ तो हैं
प्रभु की प्रेमपराग-सेज।
कल्लोल करते पंछी की आँखों में
चमकते हैं प्रभु के अनूठे गीत !
प्रकृति में खेलते रहते प्रभु के हृदय को
पहुँचेगी यदि तनिक भी चोट,

मिलेगी क्या मनुष्य को कभी
शान्ति की स्वप्नछाया भी ?
चलिए, बहाएँ आज सब जीव उर से
कारुण्य की मंगल प्रेमधारा।
वसुंधरा के सब बाल मिलकर
बजाएँ हृदय का एकतारा।
प्रेमगान से हृदय-हृदय को जगाकर
गूँथकर हाथ में हाथ सभी प्रजाएँ,
भिड़ाकर कंधे से कंधा ऐक्य से,
जग की देहरी पर खड़े-खड़े
पुकारें हम बुलन्दी से :
''मनुष्य, प्रकृति, सभी के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्'।''
अनन्त को वेध कर पहुँच जाएगा यह शब्द
जहाँ झूम रही हैं कोटि-कोटि सूर्यमालाएँ
जहाँ शान्ति के रास जमे हैं रसभरे,
'यत्रैव विश्वं भवत्येकुनीड़म्।'

शब्दार्थ-टिप्पण

वेधे जाना छेदे जाना, काटे जाना **सुरम्य** सुन्दर **काया** शरीर **आहत** घायल **कानन** जंगल **कलेवर** शरीर **अघाना** छकना, तृप्त होना **कल्लोल** आनंदपूर्ण शब्द **अनूठे** अनोखे **वसुन्धरा** पृथ्वी।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) 'प्रभु की प्रेम-पराग सेज' कहाँ हैं ?

(2) कल्लोल करते पक्षी की आँखों में क्या चमकता है ?

(3) कवि ने किन्हें कपूत कहा है ?

(4) सभी जीवों के हृदय में कवि क्या बहाने का आह्वान कर रहा है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) जग में मानव के अलावा अन्य कौन-कौन हैं ?

(2) जग की देहरी पर खड़े होकर हमें क्या पुकारना चाहिए ?

(3) प्रकृति माता कब रोती है ?

(4) शान्ति के रास कहाँ जमे हैं और कैसे ?

3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-सात वाक्यों में लिखिए :

(1) प्रकृति माता कब-कब दिल का दु:ख व्यक्त करती हैं - विस्तार से समझाइए।

(2) प्रकृति में ईश्वर की क्रीड़ा कहाँ-कहाँ और किन रूपों में दिखाई देती है, विस्तार से लिखिए।

(3) 'विश्वशांति' काव्य का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

4. काव्य पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

(1) '' वसुंधरा के सब बाल मिलकर
बजाएँ हृदय का एकतारा।''

(2) भिड़ाकर कंधे से कंधा ऐक्य से,
जग की देहरी पर खड़े-खड़े
पुकारें हम बुलन्दी से :
''मनुष्य, प्रकृति, सभी के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्'।''

5. मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) आहत होना

(2) दिल का दुख बहाना

(3) हाथों में हाथ गूँथना

(4) कंधे से कंधा मिलाना

(5) बुलंदी से पुकारना

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पक्षी, पुष्प, वन, सूर्य।

7. तत्सम शब्द लिखिए :

पंखी, सेज, कपूत।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' विषय पर दो-तीन अनुच्छेद लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'यह पृथ्वी केवल मनुष्य के लिए नहीं, अपितु सभी जीवों के लिए है' इसके बारे में वर्ग में चर्चा कीजिए ।

●

16 विवेक वाणी

स्वामी विवेकानंद

(जन्म : सन् 1862 ई.; निधन : 1902 ई.)

स्वामी विवेकानंद का मूल नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। इनका जन्म कोलकाता में हुआ था। वे साहित्य, दर्शन और इतिहास के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने देश-विदेश के लोगों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया था। इन्होंने रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा प्राप्त की थी। जनसेवा को ही इन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। इन्होंने वेलूर में रामकृष्ण मठ की स्थापना की। अमेरिका में दिये गये इनके व्याख्यान अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुए। इनकी रचनाओं तथा व्याख्यानों का संकलन 'विवेकानंद साहित्य' के नाम से दस भागों में किया गया है।

यहाँ उनके दो व्याख्यान संकलित किये गये हैं। पहले व्याख्यान में उन्होंने सभी धर्मों के बीच सहिष्णुता पर बल देते हुए कहा था, 'हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं।' दूसरे व्याख्यान में उन्होंने धार्मिक संकीर्णता को उजागर करने के लिए 'कुएँ के मेंढक' वाली कथा का प्रतीकात्मक प्रयोग किया है।

---

[1]

धर्म-महासभा : स्वागत का उत्तर

(विश्व-धर्म-महासभा, शिकागो, 11 सितम्बर, 1893 ई.)

अमेरिकावासी बहनो तथा भाइयो,

आपने जिस सौहार्द और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया है, उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा है। संसार में संन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ; धर्मों की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ; और सभी सम्प्रदायों एवं मतों के कोटि-कोटि हिन्दुओं की ओर से भी धन्यवाद देता हूँ।

मैं इस मंच पर से बोलनेवाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने प्राची के प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के ये लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रसारित करने के गौरव का दावा कर सकते हैं। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति, दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट अंश को स्थान दिया था, जिन्होंने दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी, जिस वर्ष उनका पवित्र मंदिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मैं गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने महान् जरथुष्ट्र जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है। भाइयों, मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियाँ सुनाता हूँ, जिसकी आवृत्ति मैं अपने बचपन से करता रहा हूँ और जिसकी आवृत्ति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते हैं :

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

'जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न-भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार हे प्रभो ! भिन्न-भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जानेवाले लोग अन्त में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं ।'

यह सभा, जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक है, स्वत: ही गीता के इस अद्‌भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत् के प्रति उसकी घोषणा है :

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

– 'जो कोई मेरी ओर आता है-चाहे किसी प्रकार से हो-मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न-भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अंत में मेरी ही ओर आते हैं।'

साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी बीभत्स वंशधर धर्मान्धता इस सुन्दर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी है। वे पृथ्वी को हिंसा से भरती रही हैं, उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही हैं, सभ्यताओं को विध्वंस करती और पूरे-पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही हैं। यदि ये बीभत्स दानवी न होतीं, तो मानव-समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर अब उनका समय आ गया है, और मैं आंतरिक रूप से आशा करता हूँ कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घंटा-ध्वनि हुई है, वह समस्त धर्मान्धता का, तलवार या लेखनी के द्वारा होनेवाले सभी उत्पीड़नों का, तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होनेवाले मानवों की पारस्परिक कटुताओं का मृत्यु-निनाद सिद्ध हो।

[2]

हमारे मतभेद का कारण

(15 सितम्बर, 1893 ई.)

मैं आप लोगों को एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ। अभी जिन वाग्मी वक्ता महोदय ने व्याख्यान समाप्त किया है, उनके इस वचन को आप लोगों ने सुना है कि 'आओ, हम लोग एक दूसरे को बुरा कहना बंद कर दें', और उन्हें इस बात का बड़ा खेद है कि लोगों में सदा इतना मतभेद क्यों रहता है।

परन्तु मैं समझता हूँ कि जो कहानी मैं सुनानेवाला हूँ, उससे आप लोगों को इस मतभेद का कारण स्पष्ट हो जायेगा । एक कुएँ में बहुत समय से एक मेंढक रहता था। वह वहीं पैदा हुआ था और वहीं उसका पालन-पोषण हुआ, पर फिर भी वह मेंढक छोटा ही था। हाँ, आज के क्रमविकासवादी (evolutionists) उस समय वहाँ नहीं थे, जो हमें यह बतला सकते कि उस मेंढक की आँखें थीं अथवा नहीं, पर यहाँ कहानी के लिए यह मान लेना चाहिए कि उसकी आँखें थीं, और वह प्रतिदिन ऐसे पुरुषार्थ के साथ जल को सारे कीड़ों और कीटाणुओं से रहित पूर्ण स्वच्छ कर देता था कि उतना पुरुषार्थ हमारे आधुनिक कीटाणुवादियों (bacteriologists) को यशस्वी बना दें। इस प्रकार धीरे-धीरे यह मेंढक उसी कुएँ में रहते-रहते मोटा और चिकना हो गया। अब एक दिन एक दूसरा मेंढक, जो समुद्र में रहता था, वहाँ आया और कुएँ में गिर पड़ा।

''तुम कहाँ से आये हो ?''

''मैं समुद्र से आया हूँ।''

''समुद्र। भला, कितना बड़ा है वह ? क्या वह भी इतना ही बड़ा है, जितना मेरा यह कुआँ ?'' और यह कहते हुए उसने कुएँ में एक किनारे से दूसरे किनारे तक छलाँग मारी।

समुद्रवाले मेंढक ने कहा, ''मेरे मित्र। भला, समुद्र की तुलना इस छोटे से कुएँ से किस प्रकार कर सकते हो ?''

तब उस कुएँवाले मेंढक ने एक दूसरी छलाँग मारी और पूछा, ''तो क्या तुम्हारा समुद्र इतना बड़ा है ?''

समुद्रवाले मेंढक ने कहा, ''तुम कैसी बेवकूफ़ी की बात कर रहे हो। क्या समुद्र की तुलना तुम्हारे कुएँ से हो सकती है ?''

अब तो कुएँवाले मेंढक ने कहा, ''जा, जा। मेरे कुएँ से बढ़कर और कुछ हो ही नहीं सकता। संसार में इससे बड़ा और कुछ नहीं है। झूठा कहीं का। अरे, इसे बाहर निकाल दो।''

यही कठिनाई सदैव रही है।

मैं हिन्दू हूँ। मैं अपने क्षुद्र कुएँ में बैठा यही समझता हूँ कि मेरा कुआँ ही संपूर्ण संसार है। ईसाई भी अपने क्षुद्र कुएँ में बैठे हुए यही समझता है कि सारा संसार उसी के कुएँ में है और मुसलमान भी अपने क्षुद्र कुएँ में बैठा हुआ उसी को सारा ब्रह्माण्ड मानता है। मैं आप अमेरिकावालों को धन्य कहता हूँ, क्योंकि आप हम लोगों के इन छोटे-छोटे संसारों की क्षुद्र सीमाओं को तोड़ने का महान् प्रयत्न कर रहे हैं, और मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में परमात्मा आपके इस उद्योग में सहायता देकर आपका मनोरथ पूर्ण करेंगे।

---

1. 15 सितम्बर, शुक्रवार के अपराह्न में धर्म-महासभा के पंचम दिवस के अधिवेशन के समय भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बी अपने-अपने धर्म की प्रधानता का प्रतिपादन करने के लिए वितण्डावाद में जुट गये थे। अन्त में स्वामी विवेकानन्द ने यह कहानी सुनाकर सबको शान्त कर दिया। स.
2. सब बीमारियाँ कीड़ों से उत्पन्न होती है, अतएव कीड़ों को नष्ट करना चाहिए-यह इन लोगों का मत है। स.

शब्दार्थ-टिप्पण

सौहार्द मित्रता का भाव **प्राची** पूर्व दिशा **सुदूर** बहुत दूर **अवशिष्ट** शेष, बचा हुआ **स्रोत** उद्‌गम, मूल स्थान, साधन **विध्वंस** विनाश **उत्पीड़न** सताना, दबाना **आवृत्ति** बार-बार, पुनरावर्तन **बीभत्स** घृणास्पद, **एकटक** टकटकी लगाकर **वाग्मी** बातूनी **निनाद** आवाज, नाद **वितण्डा** व्यर्थ दलील

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) स्वामी विवेकानंद अमेरिका क्यों गए थे ?
(2) विश्व धर्म-महासभा का आयोजन कब और कहाँ हुआ था ?
(3) स्वामीजी किस बात के लिए गर्व का अनुभव करते हैं ?
(4) यहूदियों ने भारत में कहाँ आकर शरण ली थी ?
(5) कुएँ के मेंढक ने क्या कहते हुए एक किनारे से दूसरे किनारे तक छलाँग लगाई ?
(6) नदी एवं समुद्र के माध्यम से श्लोक में क्या कहा गया है ?
(7) अंत में स्वामीजी अमेरिकावासियों के किस प्रयास की सफलता की कामना करते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कीटाणुवादियों के प्रति क्या व्यंग्य किया गया है ?
(2) दूसरे व्याख्यान का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
(3) वाग्मी वक्ता महोदय ने अपने व्याख्यान में क्या कहा था ?
(4) स्वामीजी द्वारा उल्लिखित गीता के उपदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) स्वामीजी ने अपने भाषण के प्रारंभ में अमेरिकावासियों का आभार किस प्रकार व्यक्त किया ?
(2) प्रथम भाषण का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
(3) कुएँ के मेंढक की कहानी से विवेकानंदजी क्या कहना चाहते थे ? समझाइए।
(4) स्वामीजी के अनुसार किस कारण मानव-समाज अधिक उन्नत नहीं हो पाया ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् सब धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं।

(2) यदि ये बीभत्स दानवी न होतीं तो मानव-समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता।

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

आभार, अवर्णनीय, कतिपय, स्वीकृति, अवशिष्ट, स्रोत, क्षुद्र।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

पवित्र, सांप्रदायिक, आंतरिक, मतभेद।

7. निम्नलखिति शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

उन्नति, धर्मांध, सज्जन, अत्याचार, सदैव, मनोरथ।

8. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह करके भेद बताइए :

मतभेद, प्रतिदिन, टेढ़े-मेढ़े, सर्वश्रेष्ठ, घंटा-ध्वनि, मृत्यु-निनाद।

9. सही विकल्प चुनकर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) सितम्बर 1893 में अमेरिका के .... शहर में विश्व-धर्म-महासभा का आयोजन हुआ था।

(A) न्यूयोर्क (B) शिकागो (C) वाशिंगटन (D) बोस्टन

(2) स्वामी विवेकानंद के जीवन पर .... का अत्यधिक प्रभाव था।

(A) श्रीकृष्ण (B) विनोबा भावे (C) रामकृष्ण परमहंस (D) महर्षि अरविंद

(3) कुएँ के मेंढक की कहानी .... का संकेत करती है।

(A) संकीर्णता (B) विशालता (C) उदारता (D) प्राचीनता

(4) संसार में .... की सबसे प्राचीन परंपरा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

(A) अध्यापकों (B) संन्यासियों (C) गृहस्थों (D) विद्यार्थियों

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- स्वामी विवेकानंद के आदर्श वाक्यों का संकलन करें।
- स्वामीजी के जीवन-प्रसंगों पर आधारित वक्तृत्व-स्पर्धा का आयोजन करें।
- पाठ में आए दोनों श्लोकों का सुलेखन करके भावार्थ लिखें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- स्वामी विवेकानंद के जीवन पर स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रभाव की जानकारी दें।
- पाठ के आधार पर धार्मिक संकीर्णता का आशय स्पष्ट करें।

●

17 शबरी

नरेश मेहता

(जन्म : सन् 1922 ई.; निधन : 2000 ई.)

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रयोगशील रचनाकार नरेश मेहता का जन्म शाजापुर (मध्यप्रदेश) में एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। आकाशवाणी और पत्रकारिता से लम्बे समय तक सम्बद्ध रहने के बाद स्वतंत्र लेखन करते रहे। वे आधुनिकता के मुहावरे को दुहराने के बजाय अपना नया मुहावरा गढ़ते नजर आते हैं।

नरेश मेहता की भाषा, कथ्य और शिल्प सबमें एक नवीन प्रयोगशीलता दिखाई देती है। अपनी परिष्कृत भाषा, सृजनात्मक विपुलता एवं विशाल फलक के कारण समकालीन साहित्यकारों में इनका विशिष्ट स्थान है। पौराणिक घटनाओं – पात्रों में एक नया संदर्भ और नया अर्थ तलाशने की उनकी अपनी अलग शैली है। 'अरण्या', 'वनपाखी सुनो', 'मेरा समर्पित एकान्त', 'तुम मेरा मौन हो', 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान', 'प्रवाद पर्व', 'उत्सवा', 'देखना एक दिन' आदि इनके मुख्य काव्य-संग्रह हैं। इनके आठ से अधिक उपन्यास, अनेक नाटक, कहानी संग्रह तथा चिन्तनात्मक निबंध भी प्रकाशित हो चुके हैं। इनके उपन्यासों में नारी-जीवन के संघर्षों और निम्न मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों के जीवन-संघर्षों को अभिव्यक्ति मिली है। इन्हें भारत-भारती सम्मान, साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

खंड-काव्य 'शबरी' के इस अंश में मतंग ऋषि के पम्पासर आश्रम में शबरी पहुँचती है और ऋषि से निवेदन करती है कि वे उसे भी आश्रम में रहकर प्रभु की भक्ति, सेवा करने का अवसर दें। मतंग ऋषि लोकापवाद के भय के कारण संकोच दिखाते हैं, तब शबरी उन्हें तर्कपूर्ण उत्तर देती है। जिसे सुनकर वे प्रसन्न हो जाते हैं, और अंत में उसे आश्रम में रहने की सहर्ष अनुमति देते हैं।

'सौभाग्यवती तुम लगती हो
परिवार और पुरजन होंगे',
'परिवार और पुरजन कैसे ?'
'कुछ सांसारिक बन्धन होंगे !'

'मैं सब को तृणवत् त्याग
चली आयी प्रभु के श्रीचरणों में'
अन्त्यज सीमा ज्ञात मुझे
पर पड़ी रहूँ श्रीचरणों में।'

'आश्रम की भी सामाजिकता
कैसे अछूत रह सकता है ?
उस पर स्त्री, घर से भागी
कुछ भी प्रवाद हो सकता है।'

'स्थान यहाँ देना तुमको
इसका निर्णय, सब पर निर्भर,
यदि उच्चवर्ण की होतीं तुम
तो प्रश्न नहीं था कुछ दूभर।'

'मैं समझी प्रभु हैं अग्निरूप
सब सांसारिकता से ऊपर
अन्त्यज भी हो जाते पावन
जिनकी पवित्रता को छूकर।

'क्या आत्मा की उन्नति केवल
है उच्च वर्ग तक ही सीमित ?
प्रभु तो हैं सबके पिता, भला
उनका आराधन क्यों सीमित ?'

चौके मतंग, वह समझ गये
कीचड़ में कमल खिला है यह।
होगी अछूत, पर जाने किन
जन्मों का पुण्य खिला है यह।

शब्दार्थ-टिप्पण

सौभाग्यवती सुहागिन **पुरजन** नगरवासी **तृणवत्** तिनके के समान **अन्त्यज** शूद्र **पावन** पवित्र **प्रवाद** विवाद **दूभर** कठिन **आराधन** पूजा।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) शबरी ने अपने परिवारजनों को किसके समान त्याग दिया ?

(2) शबरी किसके चरणों में पड़ी रहना चाहती थी ?

(3) शबरी को आश्रम में रखने का निर्णय किस पर निर्भर था ?

(4) आश्रम में शबरी का रहना कब आसान हो जाता ?

(5) शबरी के मतानुसार अन्त्यज कैसे पवित्र हो जाते हैं ?

2. प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) शबरी को देखकर मतंग ऋषि ने क्या कहा ?

(2) मतंग ऋषि शबरी को अपने आश्रम में रखने से क्यों हिचकिचाते थे ?

(3) शबरी को आश्रम में रखने को लेकर मतंग ऋषि के मन में क्या दुविधा थी ?

3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :

(1) शबरी की आध्यात्मिकता को देखकर मतंग ऋषि क्या सोचते हैं ?

(2) आत्मोन्नति के संबंध में मतंग ऋषि और शबरी के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।

4. काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(i) चौंके मतंग, वह समझ गये
कीचड़ में कमल खिला है यह।

(ii) मैं समझी प्रभु हैं अग्निरूप
सब सांसारिकता से ऊपर।

5. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) मैं सबको तृणवत् त्याग चली आई .... के चरणों में।

(A) प्रभु (B) देव (C) ईश्वर (D) भगवान

(2) मैं समझी प्रभु हैं ....।

(A) प्रेम रूप (B) अदृश्य रूप (C) मूर्ति रूप (D) अग्नि रूप

(3) क्या आत्मा की उन्नति केवल है .... तक ही सीमित।

(A) निम्न वर्ग (B) उच्च वर्ग (C) मध्यम वर्ग (D) अछूत वर्ग

(4) उस पर स्त्री घर से भागी कुछ भी .... हो सकता है।

(A) अपवाद (B) विवाद (C) प्रवाद (D) प्रमाद

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

तृण, घर, उन्नति, आग, स्त्री।

7. विलोम शब्द लिखिए :

सीमित, उच्च, प्रश्न, पवित्र, ज्ञात, दूभर, भला, पुण्य।

8. वर्तनी शुद्ध करके लिखिए :

सिमीत, सांसारीक, सोभाग्यवति, परीवार, सामाजीकता, पवीत्रता।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'शबरी और मतंग ऋषि' के संवादों को वर्ग में प्रस्तुत कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- गुजरात के आदिवासी जीवन के विषय में प्रोजेक्ट तैयार करवाएँ।

●

18 गिरगिट

अंतोन चेखव

(जन्म : सन् 1860 ई.; निधन : 1904 ई.)

इनका जन्म रूस के तगानरोग कस्बे में हुआ था। इन्होंने मास्को के मेडिकल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की और डॉक्टरी भी की। इनका विवाह विनेप्पर नाम की अभिनेत्री से हुआ था। दुनिया के महत्वपूर्ण कथाकारों की सूची इनके नाम के बिना पूरी नहीं गिनी जाती। अक्तूबर की क्रांति से पहले के रूसी समाज की परिस्थितियों में जन्म लेनेवाले सबसे महत्वपूर्ण लेखकों में से ये एक गिने जाते हैं। इनकी सौ से अधिक कहानियाँ न सिर्फ़ प्रकाशित ही हुई हैं बल्कि विश्व की अधिकांश भाषाओं में अनूदित भी हुई हैं। ये जितने महत्वपूर्ण कथाकार थे, उतने ही महत्वपूर्ण नाटककार भी थे। इनके नाटक चेरी आर्चड, सीगल, थ्री सिस्टर्स, अंकल वान्या विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाओं पर कई फिल्में भी बनी हैं।

'गिरगिट' पुलिस इंस्पेक्टर ओचुमेलोव के पल-पल रंग बदलनेवाले व्यक्तित्व पर तीखा व्यंग्य करनेवाली कहानी है । ख्यूक्रिन जब शिकायत करता है कि उसे कुत्ते ने काट लिया है, तो वह कुत्ते के मालिक को सबक़ सिखाने की बात करता है। जब उसे पता चलता है कि वह कुत्ता जनरल झिगालॉव का है, तो वह कुत्ते के काटने में ख्यूक्रिन की ग़लती निकालता है। जब सिपाही कहता है कि 'यह जनरल साहब का कुत्ता नहीं है।' तब वह रंग बदलकर फिर ख्यूक्रिन के पक्ष में हो जाता है। इस तरह उसका बार-बार अपना रंग बदलना गिरगिट की याद दिलाता है।

हाथ में बंडल थामे, पुलिस इंसपेक्टर ओचुमेलॉव नया ओवरकोट पहने हुए, बाज़ार के चौराहे से गुज़रा। उसके पीछे, अपने हाथों में, ज़ब्त की गई झरबेरियों की टोकरी उठाए, लाल बालोंवाला एक सिपाही चला आ रहा था। चारों ओर खामोशी थी... चौराहे पर किसी आदमी का निशान तक नहीं था। दुकानों के खुले दरवाज़े, भूखे जबड़ों की तरह, भगवान की इस सृष्टि को उदास निगाहों से ताक रहे थे। कोई भिखारी तक उनके आस-पास नहीं दिख रहा था।

सहसा ओचुमेलॉव के कानों में एक आवाज़ गूँजी-''तो तू काटेगा ? तू ? शैतान कहीं का ! ओ छोकरो ! इसे मत जाने दो। इन दिनों काट खाना मना है। पकड़ लो इस कुत्ते को। आह..... !''

तब किसी कुत्ते के किकियाने की आवाज़ सुनाई दी। ओचुमेलॉव ने उस आवाज़ की दिशा में घूमकर घूरा और पाया कि एक व्यापारी पिचूगिन के काठगोदाम में से एक कुत्ता तीन टाँगों के बल पर रेंगता चला आ रहा है। छींट की कलफ़ लगी कमीज़ और बिना बटन की वास्केट पहने हुए, एक व्यक्ति कुत्ते के पीछे दौड़ रहा था। गिरते पड़ते उसने कुत्ते को पिछली टाँग से पकड़ लिया। फिर कुत्ते का किकियाना और एक चीख-''मत जाने दो''-दोबारा सुनाई दी। दुकानों में ऊँघते हुए चेहरे बाहर झाँके और देखते ही देखते, जैसे ज़मीन फाड़कर निकल आई एक भीड़, काठगोदाम को घेरकर खड़ी हो गई।

''हुजूर ! यह तो जनशांति भंग हो जाने जैसा कुछ दीख रहा है'', सिपाही ने कहा।

ओचुमेलॉव मुड़ा और भीड़ की तरफ़ चल दिया। उसने काठगोदाम के पास बटन विहीन वास्केट धारण किए हुए उस आदमी को देखा, जो अपना दायाँ हाथ उठाए वहाँ मौजूद था तथा उपस्थिति लोगों को अपनी लहूलुहान

उँगली दिखा रहा था। उसके नशीले-से हो आए चेहरे पर साफ़ लिखा दिख रहा था-''शैतान की औलाद ! मैं तुझे छोड़ने वाला नहीं ! और उसकी उँगली भी जीत के झंडे की तरह गड़ी दिखाई दे रही थी। ओचुमेलॉव ने इस व्यक्ति को पहचान लिया। वह ख्यूक्रिन नामक सुनार था और इस भीड़ के बीचोंबीच, अपनी अगली टाँग पसारे, नुकीले मुँह और पीठ पर फैले पीले दागवाला, अपराधी-सा नज़र आता, सफ़ेद वारज़ोई पिल्ला, ऊपर से नीचे तक काँपता पसरा पड़ा था। उसकी आँसुओं से सनी आँखों में संकट और आतंक की गहरी छाप थी।''

''यह सब क्या हो रहा है ?'' भीड़ को चीरते हुए ओचुमेलॉव ने सवाल किया-''तुम सब लोग इधर क्या कर रहे हो ? तुमने अपनी यह उँगली ऊपर क्यों उठा रखी है ? चिल्ला कौन रहा था ?''

''हुज़ूर ! मैं तो चुपचाप चला जा रहा था'', मुँह पर हाथ रखकर खाँसते हुए ख्यूक्रिन ने कहा-''मुझे मित्री मित्रिच से लकड़ी लेकर कुछ काम निपटाना था, तब अचानक इस कम्बख्त ने अकारण मेरी उँगली काट खाई। माफ़ करें। आप तो जानते हैं मैं ठहरा एक कामकाजी आदमी... मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है। मुझे लग रहा है एक हफ़्ते तक मेरी यह उँगली अब काम करने लायक नहीं हो पाएगी। तो हुजूर ! मेरी गुज़ारिश है कि इसके मालिकों से मुझे हरज़ाना तो दिलवाया जाए। यह तो किसी कानून में नहीं लिखा है हुजूर कि आदमखोर जानवर हमें काट खाएँ और हम उन्हें बरदाश्त करते रहें। अगर हर कोई इसी तरह काट खाना शुरू कर दे तो यह जिंदगी तो नर्क हो जाए...''

''हूँ... ठीक है, ठीक है'', ओचुमेलॉव ने अपना गला खँखारते और अपनी त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा - ''ठीक है यह तो बताओ कि यह कुत्ता किसका है। मैं इस मामले को छोड़ने वाला नहीं हूँ। कुत्तों को इस तरह आवारा छोड़ देने का मज़ा मैं इनके मालिकों को चखाकर रहूँगा जो कानून का पालन नहीं करते, अब उन लोगों से निपटने का वक्त आ गया है। उस बदमाश आदमी को मैं इतना जुर्माना ठोकूँगा ताकि उसे इल्म हो जाए कि कुत्तों और जानवरों को इस तरह आवारा छोड़ देने का क्या नतीजा होता है ? मैं उसे ठीक करके रहूँगा'', तब सिपाही की तरफ़ मुड़कर उसने अपनी बात जारी रखी - ''येल्दीरीन ! पता लगाओ यह पिल्ला किसका है और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करो। इस कुत्ते को बिना देरी किए खत्म कर दिया जाए। शायद यह पागल हो... मैं पूछ रहा हूँ आखिर यह किसका कुत्ता है ?''

''मेरे खयाल से यह जनरल झिगालॉव का है'', भीड़ से एक आवाज़ उभरकर आई।

''जनरल झिगालॉव ! हूँ येल्दीरीन, मेरा कोट उतरवाने में मेरी मदद करो... आज कितनी गरमी है। लग रहा है बारिश होकर रहेगी'', वह ख्यूक्रिन की तरफ़ मुड़ा - ''एक बात मेरी समझ में नही आती - आखिर इसने तुम्हें कैसे काट खाया ? यह तुम्हारी उँगली तक पहुँचा कैसे ? तू इतना लंबा तगड़ा आदमी और यह रत्ती भर का जानवर ! जरूर ही तेरी ऊँगली पर कोई कील वगैरह गड़ गई होगी और तत्काल तूने सोचा होगा कि इसे कुत्ते के मत्थे मढ़कर कुछ हरज़ाना वगैरह ऐंठकर फ़ायदा उठा लिया जाए। मैं तेरे जैसे शैतान लोगों को अच्छी तरह समझता हूँ।''

''इसने अपनी जलती सिगरेट से इस कुत्ते की नाक यूँ ही जला डाली होगी, हुज़ूर ! वरना यह कुत्ता बेवकूफ़ है क्या जो इसे काट खाता !'' येल्दीरीन ने कहा - ''हुज़ूर ! मैं जानता हूँ यह ख्यूक्रिन हमेशा कोई न कोई शरारत करता रहता है।''

''अबे ओ शैतान की औलाद ! तूने मुझे ऐसा करते जब देखा ही नहीं तो झूठ-मूठ में सब क्यों बके जा रहा है ? हुज़ूर तो खुद बुद्धिमान आदमी है और बखूबी जानते हैं कि, कौन सच बोल रहा है और कौन झूठ।

यदि मैं झूठ बोलता पाया जाऊँ तो मुझ पर अदालत में मुकदमा ठोक दो। कानून सम्मत तो यही है... कि सब लोग अब बराबर हैं। मैं यदि आप चाहें तो यह भी बता दूँ कि मेरा एक भाई भी पुलिस में हैं...''

''बकवास बंद करो !''

''नहीं ! यह जनरल साहब का कुत्ता नहीं है'' सिपाही ने गंभीरतापूर्वक टिप्पणी की। जनरल साहब के पास ऐसा कोई कुत्ता नहीं है। उनके तो सभी कुत्ते पोंटर हैं।''

''तुम विश्वास से कह रहे हो ?''

''एकदम हुज़ूर !''

''तुम सही कहते हो। जनरल साहब के सभी कुत्ते मँहगे और अच्छी नस्ल के हैं, और यह-ज़रा इस पर नज़र तो दौड़ाओ। कितना भद्दा और मरियल-सा पिल्ला है। कोई सभ्य आदमी ऐसा कुत्ता काहे को पालेगा ? तुम लोगों का दिमाग खराब तो नहीं हो गया है। यदि इस तरह का कुत्ता मॉस्को या पीटसवर्ग में दिख जाता, तो मालूम हो उसका क्या हाल होता ? तब कानून की परवाह किए बगैर इसकी छुट्टी कर दी जाती। तुझे इसने काट खाया है, तो प्यारे एक बात गाँठ बाँध ले, इसे ऐसे मत छोड़ देना। इसे हर हालत में मज़ा चखवाया जाना ज़रूरी है। ऐसे वक्त में...''

''शायद यह जनरल साहब का ही कुत्ता है।'' गंभीरता से सोचते हुए सिपाही ने कहा - ''इसे देख लेने भर से तो नहीं कहा जा सकता कि यह उनका नहीं है। कल ही मैंने बिलकुल इसी की तरह का एक कुत्ता उनके आँगन में देखा था।''

''हाँ ! यह जनरल साहब का ही तो है'', भीड़ में से एक आवाज़ उभर आई।

''हूँ ! येल्दीरीन, मेरा कोट पहन लेने में ज़रा मेरी मदद करो। मुझे इस हवा से ठंड लगने लगी है। इस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाओ और पता लगाओ कि क्या यह उन्हीं का तो नहीं है ? उनसे कहना कि यह मुझे मिला और मैंने इसे वापस उनके पास भेज़ा है। और उनसे यह भी विनती करना कि ये इसे गली में चले आने से रोकें। लगता है कि यह काफ़ी मँहगा प्राणी है, और यदि हाँ, हर गुंडा बदमाश इसके नाक में जलती सिगरेट घुसेड़ने लगे, तो यह तबाह ही हो जाएगा। तुम्हें मालूम है कुत्ता कितना नाजुक प्राणी है। और तू अपना हाथ नीचे कर बे ! गधा कहीं का। अपनी इस भद्दी उँगली को दिखाना बंद कर। यह सब तेरी अपनी गलती है...''

''उधर देखो, जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है। ज़रा उससे पता लगाते हैं... ओ प्रोखोर ! इधर आना भाई । इस कुत्ते को तो पहचानो... क्या यह तुम्हारे यहाँ का है ?''

''एक बार फिर से तो कहो ! इस तरह का पिल्ला तो हमने कई ज़िंदगियों में नहीं देखा होगा।''

''अब अधिक जाँचने की ज़रूरत नहीं है।'' ओचुमेलॉव ने कहा - ''यह आवारा कुत्ता है। इसके बारे में इधर खड़े होकर चर्चा करने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि यह आवारा है, तो है। इसे मार डालो और सारा किस्सा खत्म !''

''यह हमारा नहीं है'', प्रोखोर ने आगे कहा ''यह तो जनरल साहब के भाई का है, जो थोड़ी देर पहले इधर पधारे हैं। अपने जनरल साहब को 'बारजोयस' नस्ल के कुत्तों में कोई दिलचस्पी नहीं है पर उनके भाई को यही नस्ल पसंद है।''